श्रीभार्गवराघवीयम् का छन्द–विमर्श

डॉ. कुमुद रानी गर्ग*

विषय प्रवेशः– इक्कीस सर्गों में आबद्ध भार्गवराघवीयम् महाकाव्य 21वीं शती की एक ऐसी यशः कृति है जिसकी काव्यकलामयी दीप्ति के सम्मुख सम्पूर्ण अधुनातन एवं पुरातन काव्य–कीर्ति तेजोहीन प्रतीत होती है। साहित्य, काव्य, व्याकरण एवं दर्शन आदि शास्त्रों के जिन दुर्लंघ्य मानदंडों को अभिलक्षित करके उन सभी वृहत्त्रयी एवं लघुत्रयी की रचना की गयी थी, उन सभी मानकों का दिव्य दर्शन अपने काव्यक्रीडाविलास के द्वारा श्रीरामभद्राचार्य भार्गवराघवीयम् महाकाव्य में कराते हैं। भार्गवराघवीयम् महाकाव्य का कलापक्ष जितना उत्कृष्ट एवं प्रासंगिक है भावपक्ष उतना ही सात्विक एवं सहज है। इस महाकाव्य में स्वनामधन्य भार्गव और राघव अर्थात् परशुराम और श्रीराम से सम्बद्ध इतिवृत्त को महाकवि ने जिस आध्यात्मिक एवं मौलिक चिन्तन तथा विलक्षण प्रतिभा के द्वारा प्रतिपादित किया है, वह निःसंदेह संस्कृत जगत् के लिए अविस्मरणीय एवं अनुकरणीय है।

महाकवि की इस अनुपम कृति को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अपनी इस अमूल्य कृति के द्वारा निरन्तर नवीन उन्मेषों, भावों परिकल्पनाओं एवं शास्त्रीय मानदण्डों को तथा स्वतः स्फूर्त करने वाली प्रतिभा को चमत्कृत करते हुए रस अलंकार एवं छन्द को सद्गति प्रदान की है।

भार्गवराघवीयम् महाकाव्य के छन्दोविधान से स्पष्ट हो जाता है कि महाकवि का छन्दशास्त्रीय ज्ञान वृहत्त्रयीकारों से भी अत्यन्त विलक्षण एवं अप्रतिम है। महाकवि कालिदास ने जहाँ 6 छन्दों, भारवी ने 12 छन्दों, माघ ने 16 छन्दों तथा श्रीहर्ष ने 19 छन्दों में अपनी रचनाधार्मिता के वैशिष्ट्य को प्रदर्शित किया है, वहीं भार्गवराघवीयम्, महाकाव्य में रामभद्राचार्य ने कुल 33 पारम्परिक एवं नूतन छन्दों का प्रयोग करके, संस्कृत काव्यशास्त्र की परम्परा में एक नवीन मानदण्ड स्थापित कर दिया है।[1]

छन्द का अर्थ एवं स्वरुपः–

छन्दस् शब्द वस्तुतः 'चादि आह्लादे' धातु से 'चन्देरादेश्च छः' इस उणादि सूत्र के द्वारा छः प्रत्यय करके निष्पन्न होता है। जिसका शाब्दिक अर्थ है – आनन्द

सहायक प्राध्यापिका(तदर्थ) मैत्रेयी महाविद्यालय नयी दिल्ली–21

का साधन अर्थात् मन को अनुरञ्जित करने वाला तथा शब्द के महत्त्व को स्थापित करने वाला।[2] इसके अतिरिक्त लोक एवं शास्त्र में छन्द शब्द का प्रयोग विविध अर्थों में किया गया हैं। वेद को भी छन्द कहा जाता है। जैसा कि पाणिनि ने अपने सूत्रों में कहा है कि –**'श्रोत्रियश्छन्दोऽ धीते'**[3] अर्थात् श्रोत्रिय वेद का अध्ययन करता हैं। इसी प्रकार 'बहुलं छन्दसि'[4] अर्थात् वेद में विकल्प के कार्य होता हैं। मनुस्मृति में भी कहा गया है कि–

युक्तश्च्छन्दांस्यधीयीत मासान् विप्रोऽर्धप×चमान्।
आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव।।[5]

इसके अतिरिक्त अनेक काव्य ग्रन्थों में भी छन्द पद को वेद के पर्याय रूप में अभिव्यक्त किया गया है। वाल्मीकि रामायण में छन्द पद का प्रयोग इच्छा अर्थ में भी किया गया है। यथा–**'मयोच्यमानं यदि ते श्रोतुं छन्दों विलासिनि'।**[6]

एतदतिरिक्त आच्छादन अर्थ में भी छन्द शब्द का प्रयोग किया जाता है। यथा –**'छन्दांसि आच्छादनात् इति'** अर्थात् आवरण क्रिया के आश्रय को छन्द कहा जाता है।

वस्तुतः शब्द और अर्थ के रुप में अभिव्यक्त सम्पूर्ण जगत् किसी न किसी धर्म अथवा अन्य वस्तुओं से आच्छादित होता है। सत्य तो यह है कि जब शब्द काव्य के रूप में अथवा श्लोक के रूप में अर्थात् मधुमय स्वरूप में या वैदिक मन्त्रों के रूप में अभिव्यक्त होते हैं तब वे लोकहित रूप छन्दों के स्वरूप को धारण किये रहते हैं। जब छन्दों से आच्छन्न लौकिक शब्दरूप लकड़ी जब नाव का स्वरुप धारण कर लोकरूप नदी में अवतरित होती है जब उसकी लोकोपकाररूप परायणता सार्वजनिक रूप से अभिव्यक्त होती है। अतः सार रूप में यह कहा जा सकता है कि छन्दों से आबद्ध श्लोकात्मक लौकिक शब्द तथा मन्त्रात्मक वैदिक शब्द श्रोताओं के इष्टसाधक हुआ करते हैं। शब्दों से होने वाली इष्टसिद्धि में शब्दनिष्ठ छन्दों की उपादानता अभिव्यक्त होती है।

इस प्रकार देखा जाय तो छन्द अनेकार्थक है तथापि हमें जो अभिप्रेत है उसका व्युत्पतिधायक शब्दार्थ यही है कि जिस प्रकार संगीतादि में स्वर, ताल आदि के द्वारा रस का संचरण होता है और उससे श्रोता एवं वक्ता को चित्ताह्लादकत्व की अनुभूति होने लगती है ठीक उसी प्रकार लधुगुरुस्वरसंयोजित छन्दोबद्ध काव्य के द्वारा भी वक्ता श्रोता को चित्ताह्लादकत्व की प्राप्ति होती हो अर्थात् आनन्द की प्राप्ति हो, वहीं छन्द है।

'श्रीभार्गवराघवीयम्' महाकाव्य में प्रयुक्त 'छन्द':–

महाकवि का छन्दशास्त्रीय ज्ञान बृहत्त्रयीकारों से भी विलक्षण एवं अप्रतिम है।

महाकवि कालिदास ने जहाँ 6 छन्दों में, भारवि ने 12 छन्दों में, माघ ने 16 छन्दों में तथा श्रीहर्ष ने 19 छन्दों में अपनी रचनाधर्मिता का वैशिष्ट्य प्रदर्शित किया है। वहीं 'भार्गवराघवीयम्' में अनुष्टुप, शार्दूलविक्रीडित, वंशस्थ, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, मालिनी, उपजाति, वैतालिक, हरिणी, प्रहर्षिणी, द्रुतविलम्बित, त्रोटक, स्वगता, रथोद्धता, आर्या, शिखरिणी, शालिनी, वसन्ततिलका, स्रग्धरा, गीतकम्, हरिगीतकम्, घनाक्षरी, सपादिका, मत्तगजेन्द्रम्, नार्कुटिकम्, इन्द्रवंश, पृथ्वी, कनकमंजरी, भुजंप्रयात, मन्दाक्रान्ता, मत्तमयूरिकम् आदि 33 पारम्परिक एवं नवीन छन्दों का प्रयोग करके न केवल उक्त मूर्धन्य कवियों की अग्रिम पंक्ति में अपने को स्थापित किया है अपितु संस्कृत काव्यशास्त्र में एक नवीन मानक भी सुस्थिर किया है। इनमें से कुछ छन्दों का विवरण इस प्रकार है –

अनुष्टुप छन्द :–

श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं, सर्वत्रा लघु पंचमम्।
द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।[7]

अर्थ – अनुष्टुप एक वार्णिक छन्द है, जिसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं। इसके चारों चरणों में छठा अक्षर गुरु तथा पांचवां लघु होता है दूसरे और चौथे चरणों में सातवां अक्षर लघु होता है तथा पहले और तीसरे चरणों में सातवां अक्षर गुरु होता है। यह अत्यन्त प्रचलित छन्द है। वाल्मीकि रामायण से ही इसका शुभारम्भ हुआ था। रघुवंश का आरम्भ भी इसी छन्द से हुआ है। 'भार्गवराघवीयम्' महाकाव्य का मंगलाचरण भी इसी छन्द में निबद्ध है। यथा–

सीतारामयशोमञ्जुमुक्तामोदमुदं मुदे।
वन्दे वाग्देवतानाम्नीं मरालीं मानसाश्रयाम्।।[8]

प्रस्तुत श्लोक के प्रत्येक चरण में आठ वर्ण हैं तथा प्रत्येक चरण में पांचवा वर्ण लघु तथा छठा वर्ण गुरु हैं और दूसरे तथा चौथे चरणों का सातवां वर्ण लघु है।

इन्द्रवज्रा छन्द :–

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।[9]

अर्थात् इन्द्रवज्रा में प्रत्येक चरण में तगण, तगण, जगण तथा दो गुरु वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण होते हैं। यति पांच वर्णों के बाद होती है।

हे राम हे राघव रावणारे हे जानकीनेत्रचकोरचन्द्र।
हे दीनबन्धो करुणैकसिन्धो त्रायस्व लोकं ननु राक्षसेन्द्रात्।[10]

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः दो तगण, एक जगण तथा दो गुरु वर्ण हैं, अतः इन्द्रवज्रा छन्द है। इस श्लोक के प्रथम चरण का अन्तिम वर्ण लघु है जबकि छन्द पूर्ति दीर्घ वर्ण से होती है, अतः इस अन्तिम वर्ण को आवश्यकतानुसार

दीर्घ माना जा सकता है।

उपेन्द्रवज्राछन्दः–

उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततोगौ।[11]

अर्थात् उपेन्द्रवज्रा में प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण, तथा दो गुरू वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण होते हैं। यति पांच वर्णों के बाद होती है।यथा

गुरुं पुरस्कृत्य गुरुस्त्रिलोक्या गुरुप्रभावों गुरुदर्शनार्थी।
गुरुपमानो गुरुभारहारी गुरुभारहारी गुरूकरिश्यन् गुरुमभ्यगच्छत्।।[12]

प्रस्तुत श्लोक में चारों में क्रमशः जगण, तगण, जगण तथा दो गुरू वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण हैं। इस श्लोक के चौथे चरण का अन्तिम वर्ण लघु है, जबकि छन्दपूर्ति गुरू वर्ण से होती है। अतः इसे आवश्यकतानुसार दीर्घ माना जा सकता है।

उपजाति छन्दः–

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु, वदन्ति जातिश्विदमेव नाम।।[13]

अर्थात् उपजाति छन्द के प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं। यह छन्द–इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा–दोनों छन्दों के मिश्रण से बनता है । चरणों में से दो चरणों में इन्द्रवज्रा और दो में उपेन्द्रवज्रा हो सकता है अथवा एक चरण में इन्द्रवज्रा तीन में उपेन्द्रवज्रा हो सकता है या तीन चरणों में उपेन्द्रवज्रा तथा इन्द्रवज्रा एक चरण में हो सकता है। यथा–

तमाव्रजन्तं नरदेवदेवं प्रत्युद्ययौ बन्धुगुणैः समेतः।
सम्पूजयामास यथोपचारं सम्बन्धिनं स्वं प्रणयाद् विदेहः।।[14]

प्रस्तुत श्लोक के प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण हैं। इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में उपेन्द्रवज्रा छन्द है तथा द्वितीय एवं चर्तुथ चरण में इन्द्रवज्रा छन्द है। एक ही श्लोक में कुछ चरणों में इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा छन्द होने से यहाँ 'उपजाति' छन्द है।

शलिनी छन्द :–

मतौ तो चेच्छालिनी वेदलोकैः।[15]

अर्थात् शालिनी में प्रत्येक चरण में मगण, तगण, तगण तथा दो गुरु वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण होते हैं। यति चार वर्णों के बाद होती है। यथा–

लब्ध्वा दीक्षां नैष्ठिकीं मन्मथारेर्यावज्जीवं ब्रह्मचर्यं चरिश्यन्।
मारासारं मारयिष्ये कुमारोदाराधारं त्वद्वलेनेवदैत्यान्।।[16]

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में मगण, तगण, तगण तथा दो गुरु वर्ण के

क्रम से ग्यारह वर्ण हैं। अतः यह श्लोक शालिनी छन्द का उदाहरण है।

वंशस्थ छन्द :–

जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।[17]

अर्थात् वंशस्थ छन्द में चारों चरणों में क्रमशः जगण, तगण, जगण तथा रगण के क्रम से बारह वर्ण होते हैं। यति पांच वर्ण के बाद होती है। यथा–

प्रसीद सीते कृत किल्विषे मयि निसीद चित्ते सह राघवेण मे।
विषीद मा दृष्टमदीयकल्मषाक्षमस्व मातर्मम बालचापलम्।।[18]

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः जगण, तगण, जगण तथा रगण हैं, अतः यह श्लोक वंशस्थ छन्द का अच्छा उदाहरण है।

द्रुतविलम्बित छन्द :–

द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ।[19]

अर्थात् द्रुतविलम्बित छन्द में प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण तथा रगण के क्रम से बारह वर्ण होते हैं। यति चार–चार वर्ण के बाद होती है। यथा–

रघुपतेः पदपद्मविभूषितो निखिलयोगिसमाजसभाजितः।
सकलसाधककल्पतरुर्महान् विजयसे भुवि राघवपर्वत।।[20]

प्रस्तुत श्लोक के चौथे चरण का अन्तिम वर्ण लघु है, जबकि छन्द पूर्ति दीर्घ वर्ण से होती है, अतः उसे आवश्यकतानुसार दीर्घ माना जा सकता है। इस श्लोक के प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, भगण, भगण तथा रगण है, अतः यहां द्रुतविलम्बित छन्द है।

प्रहर्षिणी छन्दः–

त्र्याशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम्।[21]

अर्थात् प्रहर्षिणी छन्द में प्रत्येक चरण में मगण, नगण, जगण, रगण तथा गुरु वर्ण के क्रम से तेरह वर्ण होते है। यति तीन और दस वर्ण पर होती है। यथा–

पूर्णाघ्हं पशुपतिना त्वयानुशिष्टोधन्यो वा वनजभुवानुजो मधोनः।
आपृच्छे निलिखगुरुं गुरुं प्रणन्तुंविभ्रद्गां त्वमिव तव स्वमूर्ध्नि गंगाम्।।[22]

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः मगण, नगण, जगण, रगण तथा अन्त में गुरु वर्ण है, अतः यहाँ प्रहर्षिणी छन्द है।

वसन्ततिलका छन्दः–

उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।[23]

अर्थात् वसन्ततितलका छन्द में चारों चरणों में तगण, भगण, जगण तथा दो

गुरु वर्णों के क्रम से चौदह वर्ण होते हैं। यति आठ और छः वर्णों पर होती है। यथा–

मन्दाकिनी पयसि भावभरं निमज्य भक्त्या समार्जिहतमत्तगजेन्द्रनाथम्।
आदौ भवस्य यदथाम्बुजविष्टरोघ्सावातिष्ठिपद्विमलल्रिंमभीप्सितार्थः।।[24]

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण हैं। अतः इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है।

मालिनी छन्दः–

ननमययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।[25]

अर्थात् मालिनी छन्द में प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण, यगण, यगण के क्रम से पन्द्रह वर्ण होते हैं। यति आठ और सात वर्ण पर होती है। यथा–

प्रणिगदति मुनीन्द्रे सस्वरं वेदमन्त्रान्।कलितकुसुमवर्षे देववर्षे प्रहर्षे।
सरसिजजजयमालां जानकी जैत्रलक्ष्म्यारघुवरवरकण्ठे प्रार्पयत् प्राप्तकाला।।26

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण तथा यगण हैं। अतः यहाँ मालिनी छन्द है।

शिचखरिणी छन्दः–

रसै रूद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।[27]

अर्थात् शिखरिणी छन्द में चारों चरणों में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण तथा अन्त में एक लघु और एक गुरु वर्ण होता है। अतः इसके प्रत्येक चरण में सत्रह वर्ण होते है। यति छठे और सत्रहवें वर्ण पर होती है। यथा–

पदं ध्यायं ध्यायं जननि तव पंकेरुह समम्गुणं गायं गायं जनकतनया जीवन हरेः।
रसं पायं पायं तव पति चरित्रेदुजनितम् मनोधायं धायं सुखमनुभवेयं त्वयि भ्गुभे।।[28]

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, तथा अन्त में लघु और गुरु वर्ण है। अतः इस श्लोक में शिखरिणी छन्द है।

रथोद्धता छन्दः–

रान्नराविह रथोद्धता लगौ।[29]

अर्थात् रथोद्धता छन्द के प्रत्येक चरण में क्रम में रगण, नगण, रगण, तथा अन्त में लघु–गुरु के क्रम से ग्यारह वर्ण होते हैं। यति तीसरे और आठवें वर्ण पर अथवा चौथे तथा सातवें वर्ण पर होती है। यथा–

चक्रवात इव पत्रवाटिकां स्वः प्रपात इव पापवापिकाम्।
द्रावयन् दुरवनीषमण्डलीमागमत् भृगुवरः स्वयंवरम्।।[30]

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः रगण, नगण, रगण, तथा अन्त में लघु

गुरु वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण हैं, अतः यह श्लोक रथोद्धता छन्द का उदाहरण है।

मन्दाक्रानता छन्द :–

मन्दक्रान्ताघ्म्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्।[31]

अर्थात् मन्द्राक्रान्ता छन्द में चारों चरणों में मगण, भगण, नगण, तगण, तगण तथा दो गुरु वर्ण के क्रम से स़त्रह वर्ण होते हैं। यति चार, छः, सात वर्ण पर होती है। यथा–

देवाहृश्टा बवृशुरनघं पारिजातप्रसूनै रेजे राजा रुचिततमसामीशधीनामिवासौ।
माहिश्मत्याः सह निववृते कामधेन्वा महात्मा पित्रयाघ्रण्यं पृथुलचरितः किन्नैर्गीतिकीर्तिः।।[32]

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः मगण, भगण, नगण, तगण, तगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण हैं। अतः यह श्लोक मन्दाक्रान्ता छन्द का उदाहरण है।

शार्दूलविक्रीडितम् छन्दः–

सूर्याश्वैर्यादि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्[33]

अर्थात् शार्दूलविक्रीडित छन्द में चारों में मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण, तथा अन्त में गुरु वर्ण के क्रम से उन्नीस वर्ण होते हैं। यति 12 और सात वर्ण पर होती है। यथा–

सीता यत्र विराजते भगवती सत्पर्णशालास्थिता
सिंचन्ती तुलसीतरूनहरहो मंदाकिनीवारिभिः।
कीरान्मंजुलसारिकाश्च विधिवत् संशिक्षयन्ती मुहुर्
धन्योघ्सौ नयनाभिरामशिखरः श्रीचित्रकूटो गिरिः।।[34]

प्रस्तुत श्लोक के चारों के चारों चरणों में क्रमशः मगण, सगण, जगण, तगण, तगण, तथा अन्त में एक गुरू वर्ण है, अतः इस श्लोक में ' षार्दूलविक्रीडित' छन्द है।

स्त्रग्धरा छन्द :–

म्रभ्नैयानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।[35]

अर्थात् स्त्रग्धरा छन्द में चरणों में मगण, रंगण, भगण, नगण, यगण, यगण, यगण, के क्रम से इक्कीस वर्ण होते हैं। यति सात–सात वर्ण पर होती है। यथा–

श्रीरामं पुर्णकाम खलकुलहतये भारतीमाव्रजन्तम।
ज्ञात्वा साकेतधाम्नो गुणगुणमहितां ब्रह्मबोध्यामयोध्याम्। पुश्पैराशैः सहासैः नवकिसलयकैः फुल्लराजीवराजीप्रन्युद्यातुं समायान् मलयजमरूतामोदकान्तो वसन्तः।।[36]

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण, यगण, यगण, यगण हैं। अतः इस श्लोक में स्त्राग्धरा छन्द है।

एकाक्षरी छन्दः–

'भार्गवराघवीयम्' के बीसवें सर्ग में क्रमशः तीन एकाक्षरी ष्लोकों की सर्जना हुई है, उनमें दो श्लोक 'क' वर्ण पर तथा एक ष्लोक 'ल' वर्ण पर आधृत है तथा इन तीनों श्लोको में आद्यान्त एकाक्षरी का विधान हुआ है। इनमें से एक श्लोक द्रष्टष्य है–

''कः कौ के केककेकाकः काक काका ककः ककः।
काकः काकः ककः काकः कुकाकः काकक: कुकः।।[37]

इस प्रकार 'भार्गवराघवीयम्' में सर्वत्र छन्दों के वैविध्य दृष्टिगोचर होते हैं।

निष्कर्षः–

भार्गवराघवीयम महाकाव्य में प्रयुक्त छन्दों के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि महाकवि का छन्दशास्त्रीय ज्ञान संस्कृत काव्य परम्परा के अन्यान्य कवियों से विलक्षण है । कवि ने इस महाकाव्य में भाव पक्ष एवं कलापक्ष के अतिरंजनाओं से उपर उठकर, उनके मणिकांचन– संयोग पर विशेष बल दिया है। कवि ने काव्य के काव्यत्व को स्वीकार तो किया है परन्तु उसे दुरूहता से दूर रखा है। महाकाव्य में छन्द के चमत्कारिक प्रयोग को उतना ही स्वीकार किया गया है जिससे समाजिक को सहज रसानुभूति हो तथा भावपक्ष के प्रवाहमयता की अविच्छिन्न धारा विच्छिन्न न हो सके। अतः भार्गवराघवीयम् के छन्दानुशीलन से स्पष्ट हो जाता है कि जहाँ संस्कृत के पुरातन एवं अधुनातन कवि लोकानुरंजनार्थ काव्य की रचना की है वहीं रामभद्राचार्य ने लोकमंगलार्थ भार्गवराघवीयम् महाकाव्य की सर्जना की है।

अतः भार्गवराघवीयम् एवं रामभद्राचार्य के सन्दर्भ में निस्संदेह रूप से कहा जा सकता है कि –

माघे किराते ननु नैशधीये रघौ कुमारेघपि च ये विशेषाः।
तेभ्योघधिकाः जागृति रामभद्राचार्योद्भवे भार्गवराघवीयम्।।

सन्दर्भ संकेतः–

1.– भार्गवराघवीयम, रामभद्राचार्य, प्रकाशकीय भागः पृ.–'द'
2.– पिंगल, छन्दशास्त्र, सम्पा. एवं भास्कार, पाठक चिन्तनारायण, भूमिका भाग, पृ.95
3.– पाणिनि, अष्टाध्यायी : 5.2.84

4.–वही– 2.4.39
5.–पिंगल, छन्दशास्त्र, सम्पादक एवं भाष्यकारः, पाठक चितनारायणः पृश्ठ–97
6.–वहीं
7.–छन्दोऽलंकारसौरभम्, डॉ. सावित्री गुप्ता, पृ.15
8.–श्रीभार्गरावघवीयम् 1/1
9.–छन्दोऽलंकारसौरभम् डॉ० सावित्री गुप्ता , पृ.17
10.–श्रीभार्गवराघवीयम् 10/22
11.–छन्दोऽलंकारसौरभम् डॉ० सावित्री गुप्ता , पृ.18
12.–श्रीभार्गवराघवीयम्, 21/37
13.–छन्दोऽलंकारसौरभम् डॉ० सावित्री गुप्ता , पृ.19
14.–श्रीभार्गवराघवीयम्, 21/32
15.–छन्दोऽलंकारसौरभम् डॉ० सावित्री गुप्ता , पृ.20
16.–श्रीभार्गवराघवीयम्, 3/97
17.–छन्दोऽलंकारसौरभम् डॉ० सावित्री गुप्ता , पृ.22
18.–श्रीभार्गवराघवीयम्, 14/83
19.–छन्दोऽलंकारसौरभम् डॉ० सावित्री गुप्ता , पृ.17
20.–श्रीभार्गवराघवीयम्, 7/39
21.–छन्दोऽलंकारसौरभम् डॉ० सावित्री गुप्ता , पृ.25
22.–श्रीभार्गवराघवीयम्, 3/98
23.–छन्दोऽलंकारसौरभम् डॉ० सावित्री गुप्ता , पृ.26
24.–श्रीभार्गवराघवीयम्, 7/51
25.–छन्दोऽलंकारसौरभम् डॉ० सावित्री गुप्ता , पृ.28
26.–श्रीभार्गवराघवीयम्, 17/99
27.–छन्दोघ्लंकारसौरभम्, डॉ. सावित्री गुप्ता, पृ. 25
28.–श्रीभार्गवराघवीयम् 14/93
29.–छन्दघ्लंकारसौभम्, डॉ. सावित्री गुप्ता, पृ. 22
30.–श्रीभार्गवराघवीयम् 18/37
31.–छन्दोघ्लंकारसौरभम्, डॉ. सावित्री गुप्ता, पृ.32
32.–श्रीभार्गवराघवीयम् 6/9833 छन्दोघ्लंकारसौरभम्, डॉ. सावित्री गुप्ता, पृ.33

34.–श्रीभार्गवराघवीयम् 7/48
35.–छन्दोघ्लंकारसौरभम्, डॉ. सावित्री गुप्ता, पृ.33–35
36.–श्रीभार्गवराघवीयम् 7/48
37.–वहीं, 20/92